साहित्य के विविध विमर्श

उच्चतर शिक्षा निदेशालय, पंचकूला, हरियाणा से अनुमोदित एवं
गुरु नानक गर्ल्ज कॉलेज यमुनानगर हरियाणा द्वारा आयोजित
एक दिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्र

संपादक

डॉ. गीतू खन्ना

संपादक मण्डल

डॉ. शक्ति, डॉ. अंजू, संदीप कौर
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता, डॉ. अमनदीप कौर

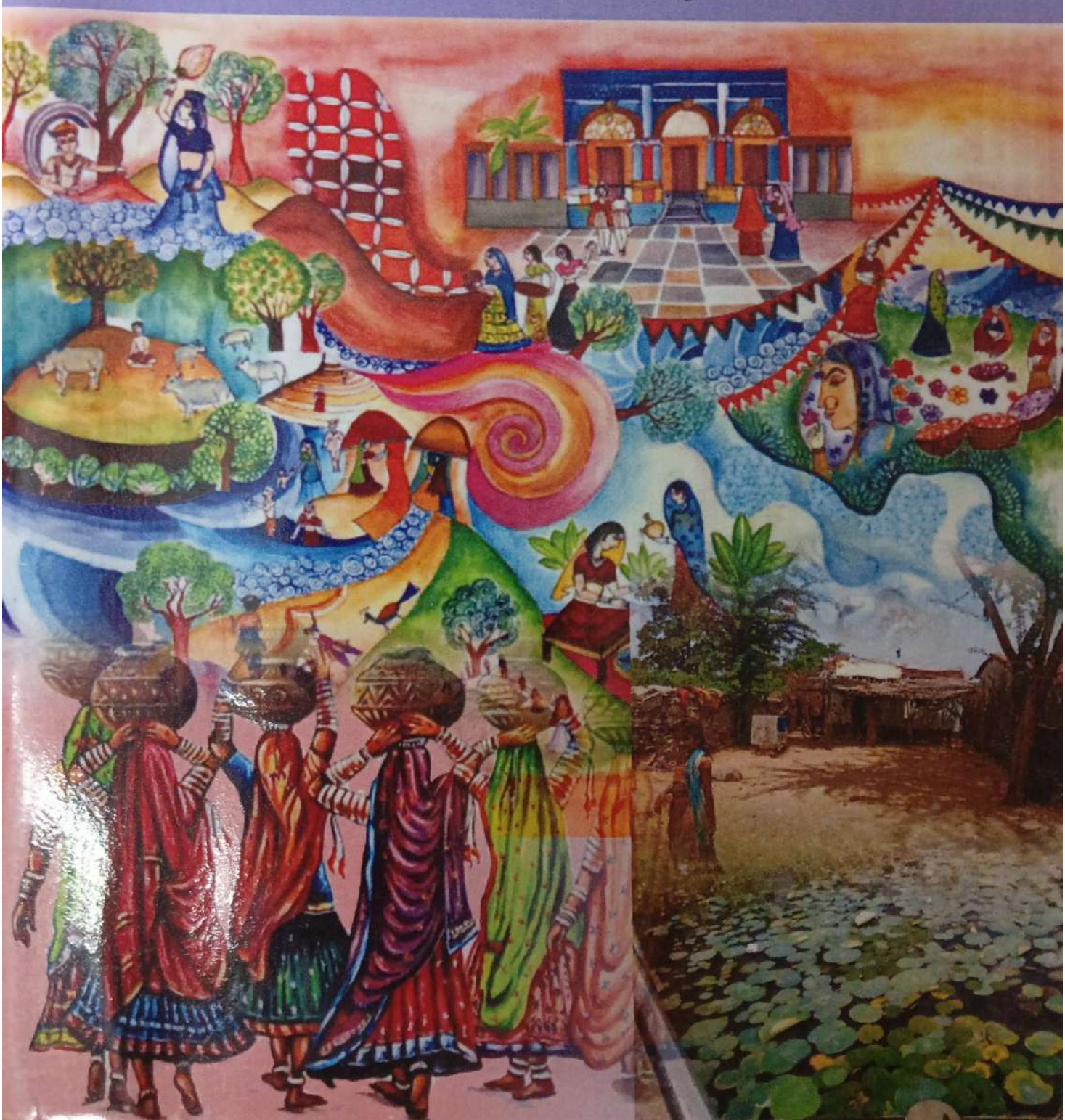

साहित्य के विविध विमर्श

उच्चतर शिक्षा निदेशालय पंचकूला

एवम्

गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज यमुनानगर

बहुविषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्र

साहित्य के विविध विमर्श

संपादक

डॉ. गीतू खन्ना

संपादक मंडल

डॉ. शक्ति, डॉ. अंजू, संदीप कौर

डॉ. लक्ष्मी गुप्ता, डॉ. अमनदीप कौर

विकास बुक कम्पनी

नई दिल्ली-110002

ISBN : 978-93-94628-38-0

© : लेखक

मूल्य : ₹ 500/-

प्रथम संस्करण : सन् 2024

प्रकाशक : विकास बुक कम्पनी
4378/4-बी, जेएमडी हाउस,
मुरारिलाल गली, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मोबाइल : 9643631687
email : vbcompany22@gmail.com

आवरण : के. एस. ग्राफिक्स

शब्द-संयोजन : सानिया कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : विशाल कौशिक ऑफसेट प्रेस,
दिल्ली-110093

Sahitya Ke Vividh Vimarsh *Edited by* Dr. Geetu Khanna
Editorial Board : Dr. Shakti, Dr. Anju, Sandeep Kaur, Dr. Laxmi Gupta, Dr. Amandeep Kaur

11. साहित्य और राजनीति 88
नितिन सुभाषराव कुंभकर्ण
12. Role of communication shaping the Indian literature 93
Dr Gunjan Sharma
13. साहित्य और बाल विमर्श 98
डॉ वन्दना गुप्ता
14. साहित्य में स्त्री विमर्श 104
साईमीरा जोशी
15. साहित्य में बाल विमर्श 108
अमित कुमार
16. डॉ॰ शांतिस्वरूप कुसुम के काव्य में पौराणिक कथाओं में नारी और समाज 113
रवि कुमार
17. Yog in Indian Literature 118
Dr Meenakshi Gupta
18. साहित्य में सांस्कृतिक पक्ष 123
डॉ. गीतू खन्ना
19. हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श 130
डॉ. शक्ति बुद्धिराजा
20. हिन्दी साहित्य और बाल विमर्श 136
डॉ. अंजु बाला
21. हिन्दी साहित्य पर राजनीति का प्रभाव 145
संदीप कौर
22. ग्रामीण संदर्भ एवं स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास 152
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता
23. हिन्दी साहित्य में बाजारवाद 160
डॉ. अमनदीप कौर
24. हिंदी साहित्य में बाल कथा विमर्श 166
मिस दीपमाला
25. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का वर्तमान स्वरूप और इसका महत्त्व 173
मोनिका चोपड़ा
26. वर्तमान युग में बोध एवं आचरण में सामंजस्य जैन-आदिपुराण के संदर्भ में 177

वर्तमान युग में बोध एवं आचरण में सामंजस्य जैन-आदिपुराण के संदर्भ में

डॉ. अनुभा जैन
गुरु नानक गर्ल्ज़ कॉलेज
यमुनानगर (हरियाणा)

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का चहुँमुखी विकास करना है, जिससे वह स्वयं परिष्कृत एवं समुन्नत हो कर समाज को भी सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करता है। जैन-सम्प्रदाय के आदि तीर्थंकर वृषभदेव ने स्वयं अ, आ आदि वर्णमाला लिखकर लिपि लिखने का उपदेश दिया क्योंकि भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है। [1] अंकगणित के ज्ञान के अभाव में किसी भी प्रकार के आंकड़ों को समझना सम्भव नहीं। सम्भवतः इस महत्ता के उद्देश्य से उन्होंने अनुक्रम से इकाई, दहाई आदि अंकों द्वारा संख्या के ज्ञान का उपदेश दिया। [2] मात्र इतना ही नहीं यह भी संकेत प्राप्त होता है कि वृषभदेव ने इन शिक्षाओं को लिखने की विधि भी सिखाई। दाहिने हाथ से वर्णमाला और बाएँ हाथ से संख्या लिखी। [3] इस गणित शास्त्र की शिक्षा को सुन्दरी ने प्राप्त किया। [4]

भारतीय मूल्यों में बाह्य की अपेक्षा आन्तरिक भाव का अधिक महत्त्व है। तभी सत्यं वद, धर्मम् चर जैसे नैतिक मूल्यों का उपदेश दिया गया है। संतुलन एवं समन्वय भारतीय मूल्यों की एक और विशेषता है जिन शासन की व्यवस्था करने वाले वृषभदेव ने अपने मुखारविन्द से 'सिद्धं नमः' इस प्रकार के मंगलाचरण का वाचन किया। जैन-सम्प्रदाय के मत में जिसका नाम 'सिद्धमातृका' है, यह स्वर और व्यंजन के भेद से दो प्रकार की है। समस्त विद्याओं में प्राप्त इसमें अनेक अक्षरों की उत्पत्ति है, यह अनेक बीजाक्षरों से व्याप्त है। [5] इस अकार से लेकर हकार पर्यन्त तथा विसर्ग अनुस्वार, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय-इन अयोगवाह पर्यन्त समस्त शुद्ध अक्षरावली के

बिना शिक्षा प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है इसलिए इसे शुद्ध मोतियों की माला के समान माना गया है जिसे 'ब्राह्मी' ने धारण किया। [6]

शिक्षा के क्षेत्र में वाड्.मय का एक विशेष महत्त्व है। व्याकरण शास्त्र, छन्दशास्त्र और अंलकार शास्त्र-इन तीनों के समूह को वाड्.मय कहा जाता है। [7] जैन- आचार्य ये सम्यक् प्रकार जानते थे कि वाड्.मय के बिना न तो कोई शास्त्र है और न ही कोई कला। इसीलिए उन्होंने वाड्.मय की शिक्षा दी ताकि संशय, विपर्यय आदि दोषों से रहित शब्द-अर्थ रूप प्रस्तुत करके ज्ञान में वृद्धि हो। [8] किसी भी भाषा के विकास के लिए उस भाषा के व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक है तभी वृषभदेव ने 100 से अधिक अध्यायों वाले व्याकरण शास्त्र की रचना की। [9] भाषा को काव्य तथा महाकाव्य में बद्ध करने के लिए छन्दों का ज्ञान महत्ती आवश्यक है। अतः इसमें निपुण होने के लिए उन्होंने छन्दों के उक्ता, अत्युक्ता आदि 26 भेदों की शिक्षा दी। [10] इतना ही नहीं प्रत्युत् प्रखर कला- कौशल के लिए उन्होंने प्रस्तार, नष्ट, उद्दिष्ट एकद्वित्रि- लघुक्रिया, संख्या और अध्वयोग छन्दशास्त्र के इन 6 प्रत्ययों का भी निरूपण किया। [11] भावों को और अधिक प्रकट करने की कला को विकसित करने के उद्देश्य से अंलकार ग्रन्थ में उपमा, रूपक, यमक आदि अंलकारों का उपदेश दिया जिसमें शब्दालंकार और अर्थालंकार रूप से दो मार्गों का विस्तृत वर्णन किया। इतना ही नहीं माधुर्य, ओज आदि 10 प्राण अर्थात् गुणों का भी निरूपण किया। [12] इस प्रकार जैन साहित्य में पदज्ञान, अर्थात् व्याकरण ज्ञान रूपी दीपिका प्रकाशित हुई। [13]

कर्मभूमि की रचना करने वाले भगवान वृषभदेव ने राज्य प्राप्त कर समाज को व्यवस्थित करने के लिए प्रजा को नियमबद्ध किया। [14] तत्पश्चात् आजीविका एवं मर्यादा-पालन के नियम बनाए। [15] उन्हें यह ज्ञात था कि शिक्षा के साथ-साथ आचरण एवं व्यवहार की शिक्षा भी समाज को उन्नत करने के लिए बहुत जरूरी है। अतः विवाह आदि की व्यवस्था करने से पूर्व उन्होंने असि, मसि, कृषि, सेवा, शिल्प और वाणिज्य-इन 6 कर्मों की व्यवस्था की।[16] क्योंकि परिवार के पालन-पोषण के लिए, अजीविका आवश्यक है और समाज को भी सुरक्षित रखने के लिए शस्त्र विद्या की शिक्षा महती आवश्यक होती है। [17] तभी वह अपने राष्ट्र को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रख कर निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। अतः उन 6 कर्मों में से तलवार आदि शस्त्र धारण कर सेवा करना, असिकर्म- लिख कर आजीविका अर्जित करना, मसिकर्म- जमीन जोत कर फसल प्राप्त करना कृषिकर्म, शास्त्र अर्थात् पढ़ा कर या नृत्य-गायन आदि के द्वारा आजीविका प्राप्त करना विद्या कर्म, व्यापार करना वाणिज्य, हस्त-कौशल से जीविका प्राप्त करना शिल्पकर्म है। जो

चित्र-खींचना, फूल पत्ते काटना आदि की अपेक्षा से अनेक प्रकार का माना गया है।[18]

जैनाचार्यों के मत में सम्यक्तत्व से ज्ञान अर्थात् सम्यग्ज्ञान, ज्ञान से पदार्थों की उपलब्धि और उससे सेव्य-असेव्य का परिज्ञान होता है। जो व्यक्ति इस ज्ञान को जानता है वह दुराचरण का त्याग कर व्रत संयमादि के संरक्षणरूप शील से विभूषित हो जाता है जिसके फलस्वरूप उसे इस लोक में अभ्युदय की प्राप्ति होती है, तत्पश्चात् निर्वाण अर्थात् शाश्वतिक मोक्ष सुख प्राप्त होता है। [19] स्पष्टतः शिक्षा का अर्थ केवल वस्तुओं का विभिन्न विषयों का ज्ञान मात्र नहीं है। ज्ञान की अथवा शिक्षा की सार्थकता वस्तुओं के ज्ञान के साथ-साथ अनुपयोगी और उपयोगी का विश्लेषण करने में होती है। इससे अनुपयोगी को त्यागने तथा उपादेय को ग्रहण करने की दृष्टि का विकास होता है।

जैन दर्शन के आचारांग सूत्रों में दो प्रकार की परिज्ञाओं का उल्लेख है एक ज्ञपरिज्ञा और दूसरी प्रत्याख्यान परिज्ञा। ज्ञपरिज्ञा से तात्पर्य किसी वस्तु का बोध करना हैं तथा प्रत्याख्यान परिज्ञा में हेय का त्याग तथा उपादेय का ग्रहण किया जाता है। इस प्रत्याख्यान परिज्ञा की प्राप्ति ही शिक्षा की सार्थकता कही गई है। इसे बोध और आचरण का समन्वय भी कहा जा सकता है। बोध एवं आचरण में सामंजस्य उत्पन्न होने पर ही कोई व्यक्ति ज्ञानी, विवेकी एवं पूर्ण शिक्षित कहा जा सकता है।

संदर्भ

1. 16.101.102
2. वही, 16.103: विस्तीर्णे हेमपट्टके।
3. वही, 16.104: विभुः करद्वयेनाबीयां लिखन्नक्षरावलीम्।
4. वही, 16.104: उपादिशल्लिपि संख्यास्थानं चाङ्.कैरनुक्रमात्।
   वही, 16.108: सुन्दरी गणितं स्थानक्रमैः सभ्यगधारयत्।
5. वही, 16.105: ततो भगवतो वक्त्रान्निः सृतामक्षरावलीम्।
   सिद्धं नम इति व्यक्तमङ्.गलां सिद्धमातृकम्।
6. वही, 16.106: अकारादिहकारान्तां शुद्धां मुक्तावलीमिव।
   स्वरव्यञजनभेदेन द्विधा भेदमुपेयुषीभा।।
7. वही, 16.111: पदविद्यामधिच्छन्दोविचितिं वागलंकृतिम्।
   त्रयी समुदितामेतां तद्विदो वाङ्.मयं विदुः।।
8. वही, 16.110: सुमेधसावसंमोहादध्येषातां गुरोर्मुखतः।
   वाग्देव्याविव निश्शेषं वाङ्.मयं ग्रन्थतोऽर्थतिः।।
9. वही, 16.112: तदा स्वायंभुव नाम पदशास्त्रमभून् महम्।

यत्तत्पराशताध्यायैरतिगम्भीरमब्धिवत्!!

10. वही, 16.113: छन्दोविचितिमप्येवं नानाध्यायैरूपादिशत्।
उक्तात्युक्तादिभेदांश्च षड्विंशतिमदीदृशत्। ।

11. वही, 16.114: प्रस्तारं नष्टमुदिद्ष्टमकत्रिलघुक्रियाम्।
संख्यामथाध्वयोगं च व्याजहार गिरांपतिः।

12. वही, 16.115: उपमादीनलंकारास्तन्मार्ग द्वयविस्तरम्।
दश प्राणनलंकारसंग्रहे विभुरभ्यधात्।।

13. वही, 16.116: अथैनयोः पदज्ञान दीपिकाभिः प्रकाशिताः।

14. वही, 16.241: प्रजानां पालने यत्नमकरोदितिविश्वसृट्।।

15. वही, 16.242: कृत्वादितः प्रजासर्गं तद् वृत्तिनियमं पुनः।
स्वधर्मानतिवृत्यैव नियच्छन्नन्वशात् प्रजाः।
आदिपुराण, 16:179
असिर्यषिः कृतिविद्या वाणिज्यं शिल्पमेव च।
कर्माणीमानि षोढा स्युः प्रजाजीवनहेतवः।।

16. आदिपुराण, 16.243: स्वदोभ्यां यारयन् शस्त्रं क्षत्रियानसृजद् विभुः।
क्षतत्राणेःनियुक्ता हि क्षत्रियाः शस्त्रणायः।।

17. द्र. आदिपुराण, 16.181-182

18. आदिपुराण, 16.271: पुण्यात् सुखं न सुखमस्ति विनेह पुण्याद्
बीजाद्विना न हि भवेयुरिह प्ररोहाः।

19. आदिपुराण, 16.271: पुण्यं च दानदम संयम सत्य शौच
त्यागक्षमा दिशुभ चेष्टित मूलमिष्टम्।।